Faculty Name – **Dr. Kavita Sharma (GF JU)**
Department – Ancient Indian History Culture & Archaeology
Class – **M.A. 2nd Semester** (एम. ए. द्वितीय सेमेस्टर)
Subject – Historiography, Concepts And Methods
(इतिहास –लेखन, धारणाएं तथा पद्धतियां )

## *युनिट 5 – इतिहास के प्रमुख सिद्धान्त* (Major theories of History)

### इतिहास की चक्रीय अवधारणा– (Cyclic Concept of History)

इतिहास की सर्वप्रथम व्यापक व्याख्या उसके चक्रीय सिद्धान्त के रूप में हुई। प्राचीन काल में पाश्चात्य संस्कृति में भी यह अवधारणा ईसा पूर्व से ईसा के काल तक विद्यमान पायी गयी है। इसके अनुसार समस्त मानवीय घटनाएं एक चक्र के रूप में होती हैं, इतिहास की चक्रीय प्रवृति के कारण यह कहा जाता है कि इतिहास अपने आपको दोहराता है। भारतीय मान्यताओं के अनुसार प्रत्येक चक्र मे चार युग होते हैं जिन्हे सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयगु, और कलियुग के नाम से जाना जाता है। प्रथम युग मानव जीवन का स्वर्ण युग कहा जाता है। द्वितीय युग में मानव जीवन में सुखों का अभाव पाया जाना प्रारम्भ हो जाता है। तृतीय युग में मानव के जीवन में दुःखों का प्रारम्भ हो जाता है अतः इसे संघर्ष के काल के नाम से भी जाना जाता है। अन्तिम युग में व्यक्ति अत्याधिक दुःखी व अभावों से ग्रस्त हो जाता है और निराशापूर्ण जीवन व्यतीत करता है, इसयुग के साथ ही मानव जगत का विनाश होने से युग चक्र पूर्ण हो जाता है। एक विद्वान के अनुसार "प्रचीन संस्कृतियों में प्रायः यह अवधारणा रही कि मानव इतिहास एक पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार अग्रसर होता जाता है। इसका लक्ष्य निश्चित है तथा इस लक्ष्य विशेष की प्राप्ति तक की विकास प्रक्रिया में आने वाली विशिष्ट अवस्थाएं भी पूर्वांकित हैं।

बौद्ध और जैन साहित्य के अध्ययन से भी युग की चक्रीय अवधारणा के सिद्धान्त की पुष्टि होती है। युनानी रोमन अवधारणाओं में चक्रवात सिद्धान्तों को मान्यता प्रदान की गयी है। **हेसियड** ने अपने वर्णन में चार युगों की कल्पना की और उन्हें धातुओं के नाम पर **स्वर्ण, रजत कांस्य** और **लौहा युग** में विभाजित किया। प्रथम युग आनन्द से परिपूर्ण था और व्यक्ति सुखी एवं सम्पन्न था। रजत युग में स्वर्ण युग की तुलना में व्यक्ति के सुखों में कमी आने लगी थी। कांस्य युग में मानव शक्तिशाली तो था परन्तु परस्पर संघर्षरत होने के कारण दयाहीन एवं निर्दयी हो गया था। परस्पर संघर्ष के फलस्वरूप वह निरंतर पतन की ओर बढ़ने लगा था। अन्तिम लौहा युग में व्यक्ति प्रारम्भ में शक्तिशाली अवश्य था किन्तु कालान्तार में दुःखों से पूर्णतः ग्रस्त हो चुका था। युनानी रोमन अवधारणा में चक्रवत सिद्धान्त पहले से विद्यमान था

Dr Kavita Sharma

क्योंकि इसके सन्दर्भ में प्लेटो ने अपने परिसंवाद में कई बार उल्लेख किया है और स्वर्ण युग का पुनः आगमन अवश्यम्भावी बताया है।

*अरब इतिहासविद् इब्नखल्दून ने मानव जीवन की चार अवस्थाओं –: बाल्यकाल, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था* के कारण युग में चक्रवत सिद्धान्त की कल्पना की है। इन चार अवस्थाओं के बाद व्यक्ति के शरीर का अन्त निश्चित है। हिन्दू मान्यताओं से भी इसकी पुष्टि होती है कि व्यक्ति बार–बार जन्म लेकर निरन्तर कष्ट सहता है। अतः चक्रीय सिद्धान्त की पुष्टि हो जाती है।

निःसन्देह चक्रवत सिद्धान्त से सम्बन्धित सभी अवधारणा का बौद्धिक महत्व है, परन्तु हम यह नहीं कह सकते कि इनमें सच्चाई का अभाव है। इनमें नये विचारों की ओर अतीत की मूलभूत पद्धति का ज्ञान निहित है। यह सिद्धान्त इस बात को भी स्पष्ट करते हैं कि इतिहास में प्रत्येक घटना का एक कारण होता है और इतिहास स्वयं को दोहराता है। विद्वानों ने इस परिवर्तन की प्रक्रिया को वर्णित करने का प्रयास किया है उन्होंने इतिहास के अर्थ और उद्देश्य पर भी प्रकाश डाला है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि मानव जीवन सदैव युग की चक्रीय प्रवृत्ति से प्रभावित होता रहा है और उससे ही मानव के सुख–दुःख नियन्त्रित होते हैं। मानवीय प्रयासों से उन्हें केवल कुछ समय के लिये टाला जा सकता है परन्तु पूरी तरह रोका नहीं जा सकता।

Dr Kavita Sharma